बेसर शैली में स्थापित है मंदिर

मंदिर अर्ध-सपाट छत के साथ एक तारे के आकार के जगती (चबूतरे) पर स्थित है। स्तंभों का एक शानदार हॉल, जिसे कल्याण मंडप के नाम से जाना जाता है। मंदिर के दक्षिण में संरेखण में स्थित है। स्तंभ शिलालेख के अनुसार रुद्र देव-प्रथम (1158-1195 सीई) के समय में पूरा होने का संकेत मिलता है। कहा जाता है कि इसके निर्माण में लगभग 72 साल लगे थे। यह मंदिर भगवान शिव, विष्णु और सूर्य को समर्पित है। श्री रुद्रेश्वर स्वामी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर का निर्माण चालुक्य मंदिरों की स्थापत्य शैली अर्थात बेसर शैली में किया गया है।

वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण
हजार स्तंभ मंदिर

अध्यात्म त्रिवेदी
एडवोकेट

तेलंगाना के वरंगल के पास हनमकोंडा शहर में स्थित श्री रुद्रेश्वर स्वामी मंदिर (हजार स्तंभ मंदिर) स्थापित है। हनमकोंडा पहाड़ी के आधार पर काकतीय शासन के दौरान बना यह मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे वेई स्तंबाला गुड़ी (हजार स्तंभ मंदिर) के रूप में जाना जाता है। संभवतः काकतीय राजा रुद्र देव (1162-63 सीई) द्वारा बनाई गई सबसे प्रारंभिक संरचना है। न केवल भक्तों के बल्कि हर इतिहास उत्साही और वास्तुकला प्रेमियों के लिए शानदार जगह है। यह मंदिर दर्शाता है कि काकतीय लोग एक उत्कृष्ट वास्तुकार थे। हजार स्तंभ मंदिर तीन देवताओं को समर्पित है। यहां प्रत्येक पीठासीन देवता के लिए तीन अलग-अलग मंदिर हैं,। हजार स्तंभ मंदिर के चौथी तरफ एक मंच पर भगवान शिव के पवित्र बैल नंदी की एक सुंदर नक्काशीदार मूर्ति है। एक ही पत्थर से उकेरी गई नंदी की मूर्ति बीते युगों की कलात्मक सुंदरता की झलक प्रस्तुत करती है। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा की ओर है, जो नंदी की अन्य मूर्तियों से अलग है, जिनका मुख आमतौर पर पश्चिम की ओर होता है। इस मंदिर की यात्रा कर मैं खुद को धन्य मानता हूं और चाहूंगा कि यहां हर कोई एक बार जरूर आए।

राजा रुद्रदेव के नाम पर रुद्रेश्वर स्वामी मंदिर

कहा जाता है कि इसका नाम राजा रुद्रदेव के नाम पर रखा गया है और इसलिए इसे श्री रुद्रेश्वर स्वामी मंदिर के नाम से जाना जाता है। मंदिर में प्रवेश करते ही प्रवेश द्वार के दोनों ओर हाथियों की सुंदर नक्काशीदार मूर्तियां आपका स्वागत करती हैं। मंदिर की छत और बाहरी दीवारों पर की गई नक्काशी भी उतनी ही आकर्षक है। समय के साथ, 132 स्तंभों वाले कल्याण मंडप की संरचनात्मक स्थिरता विभिन्न कारकों के कारण कमजोर हो गई। तुगलक वंश के आक्रमण के दौरान 1000 स्तंभ मंदिर को काफी नुकसान पहुंचा। इस मंदिर को मुगल साम्राज्य ने अपने आक्रमण के दौरान नष्ट कर दिया था। बाद में इसे भारतीय पुरातत्व सर्वे द्वारा 2004 में पुनर्निर्मित किया गया।

1000 नक्काशीदार खंभे

जैसा कि नाम से ही पता चलता है, इस मंदिर में 1000 बेहतरीन नक्काशीदार खंभे हैं, जो मंदिर की पूरी दीवार में दृढ़ता के साथ लगाए गए हैं। इसकी चट्टान से बनी हाथी की मूर्ति, नंदी (भगवान शिव का दिव्य वाहन) की विशाल मूर्ति, जटिल नक्काशी आपको मंत्रमुग्ध कर देगी। हजार स्तंभ मंदिर की आध्यात्मिक आभा इस अनुभव को और भी समृद्ध बनाती है। इसका एक दिलचस्प पहलू यह है कि यहां तीसरे देवता भगवान ब्रह्मा नहीं हैं, जिन्हें त्रिदेवों (भगवान शिव, विष्णु और ब्रह्मा) में से एक माना जाता है। यहां भगवान सूर्य को तीसरे देवता के रूप में पूजा जाता है। त्रिकुटालयम कहे जाने वाले इस मंदिर के तीन मुख्य देवता भगवान शिव, विष्णु और सूर्य हैं। हजार स्तंभ मंदिर की पूरी संरचना बेसर शैली के मुख्य लक्षण तारे के आकार में है। जटिल नक्काशीदार खंभे मंदिर की संरचना का भाग हैं, जबकि मनोरम मूर्तियां दीवारों में उत्कृष्टता से जोड़ी गई हैं। यहां बगीचे में विभिन्न छोटे-छोटे शिव लिंग भी देखे जा सकते हैं।

मंदिर जाने के लिए रास्ता

मंदिर जाने के लिए आप हैदराबाद हवाई अड्डे से वरंगल तक ट्रेन या कार से यात्रा कर सकते हैं। यात्रा का समय परिवहन के साधन के आधार पर लगभग 2.5 से 5 घंटे तक हो सकता है। यह स्थल वरंगल और हनमकोंडा शहर के बीच वरंगल रेलवे स्टेशन से लगभग छह किमी दूर है। स्टेशन से, पर्यटक ऑटो रिक्शा, टैक्सी अथवा नियमित रूप से चलने वाली सिटी बसों से यात्रा कर सकते हैं। निकटतम प्रमुख हवाई अड्डा हैदराबाद का राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, जो लगभग 160 किमी दूर है।

संस्मरण

नानी और आम का पेड़

श्रुति सुकुमार
लेखिका

नानी शब्द सुनते ही मन में प्यार व अपनेपन की याद आ जाती है। हर किसी नानी को ऐसे ही देखा जाता है, जिसकी प्यार और ममता की छांव में हम बड़े हुए। नानी का घर यानी प्यार और परंपराओं की यादें। नानी की रसोई से आने वाली मसालों की सुखद महक, मिठाइयों की मिठास, चटपटे अचार और तरह-तरह के पापड़। उनकी हंसी की आवाज, उनकी ढेर सारी कहानियां, प्यार से जिद्द करके थोड़ा और खिलाना।

नानी को हर कोई उनकी बाहरी सुंदरता से नहीं देखता, बल्कि हम सभी अपनी-अपनी नानी को प्यार व ममता की मूर्ति के रूप में ही देखते हैं। उनके गुणों व उनके स्नेह और दुलार के लिए चाहते हैं। मेरी नानी बहुत ही प्यारी और गुणों की खान थीं। अभी कुछ समय पहले ही वो चल बसीं। सब कुछ कितना सूनाकर गई। अब नानी का घर वो घर न रहा। सब ओर उदासी व खालीपन था। रह गईं तो बस उनकी यादें। मैं नानी के बगीचे में खड़ी थीं। तभी मेरी नजर उनके रोपे हुए आम के पेड़ पर पड़ी। यादों का पिटारा सा खुल गया। पेड़ फलों से लदा था। नानी ने कैसे बताया था कि उन्होंने खुद से आम की एक गुठली बोई थी फिर कैसे उसमें कल्ला फूट गया था, तो उनकी खुशी का ठिकाना न था कैसे बच्चों की तरह खुशी से चहक उठी थीं। वो निश्छल और सरल।

उन्होंने फिर उस पूरी तन्मयता से नन्हें पौधे की देखभाल की, बिल्कुल जैसे की एक मां अपने बच्चे की करती है। उनकी मेहनत रंग लाई और देखते ही देखते वो नन्हा पौधा बड़ा होने लगा। नानी उसको समय पर खाद-पानी देती। फिर कुछ ही वर्षों में वो एक पेड़ बन गया। फिर एक गर्मी उस पर बुआर आ गई। अब तो नानी बेसब्री के साथ आम के फलों के पनपने का इंतजार करने लगीं। उसमें नन्हीं-नन्हीं अमिया आते ही नानी ने हमको फोन करके बताया। उनकी आवाज में कितनी उमंग थी। कैसे खुशी से चहक रही थीं। उनके लिए तो जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि सी थी।

कुछ ही दिनों में नानी का आम का पेड़ फलों से लद गया। नानी ने हमें पेटी भर कर अमिया भिजवाई, नन्हीं-नन्हीं हरी-हरी ताजी अमिया देखकर मन खुशी से खिलखिला उठा, उन छोटी-छोटी अमियों को हाथ में लेना कितना सुखद एहसास था। यह अमिया बाजार की खरीदी अमियों से कुछ अलग थीं। इनमें नानी का अपनापन छिपा था। मम्मी ने उन अमियों का आचार डाला, कुछ का मीठा मुरब्बा और बची हुई अमियों का वो रोज आम पन्ना बनाती थी, ज्येष्ठ की गर्मी में मानो अमृतपान।

नानी ने अपने सभी रिश्तेदारों व आस-पड़ोसियों को खूब अमिया बांटी। मुझे नानी की यह सबको अपना बना लेनी की आदत खास पसंद थी। फिर कुछ समय बाद पेड़ के आम पक गए। इतने मीठे और रसीले आम मैने पहले कभी न खाए थे। उनकी मिठास कुछ और ही थी।

नानी अपने आम के पेड़ की खूब निगरानी करतीं। मोहल्ले के शैतान बच्चे जो पत्थर मार-मार कर उनके आम तोड़ना चाहते नानी उनकी खूब डांट लगातीं।

नानी ने इसके माध्यम से हमें एक दार्शनिक शिक्षा भी दे डाली। वह बोली "देखो एक गुठली के त्याग से इतना बड़ा वृक्ष बना और इतने सारे आम आए। इस वृक्ष ने सबको अपने आम खिलाए। उसी प्रकार हम भी अपने प्रेम व त्याग से सबका भला करें और प्रेम बांटे।"

अफसोस आज नानी नहीं हैं। रह गईं तो बस उनकी यादें, शिक्षाएं और यह आम का पेड़। आम के पेड़ को देखकर नानीं की यादे और भी प्रखर हो जाती हैं। नानी तो नहीं हैं, पर पेड़ के रूप में लगता है मानो नानी अब भी हमारे बीच हैं। अब तो यह "आम का पेड़" आम उनकी 'स्मृति प्रतीक' है।

24 वर्ष की महिला के गर्भाशय से निकाले 41 फाइब्रॉइड, अब बन सकती मां

- एक साल से इस समस्या से पीड़ित थी महिला, जान से साथ बच्चेदानी भी बचाई

डॉ. नीना गुप्ता
वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसुति रोग विशेषज्ञ, जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज, कानपुर

अपने मेडिकल करियर में यूं तो कई ऑपरेशन किए, जिनमें से कई जटिल ऑपरेशन भी शामिल हैं, लेकिन कानपुर की एक 24 वर्षीय महिला का जब ऑपरेशन किया तो वह क्षण कभी न भूलने वाला है। क्योंकि बांझपन की समस्या से जूझ रही महिला के गर्भाशय में 10-20 नहीं, बल्कि छोटे व बड़े मिलाकर 41 फाइब्रॉइड एक-एक कर निकाले, जिसमें सबसे बड़ा 6 गुणा 5 सेंटीमीटर का था। यह ऑपरेशन काफी चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि इसमे न सिर्फ महिला की जान बचाई गई, बल्कि वह भविष्य में मां बन सके, इसलिए काफी कोशिश करनी पड़ी। मेहनत के बाद उसकी बच्चेदानी भी सुरक्षित की, जिससे वह भविष्य में अब मां बनने का सुख भी प्राप्त कर सकती है।

शहर के यशोदा नगर निवासी 24 वर्षीय महिला मल्टीपल फाइब्रॉइड की समस्या से करीब एक साल से पीड़ित थी, जिस कारण महिला के पेट में तेज दर्द और भारी मासिक रक्तस्राव होने की समस्या थी। इस वजह से महिला के शरीर में खून की काफी कमी होने के साथ ही उसे बांझपन की समस्या से भी जूझना पड़ रहा था। बीमारी के कारण महिला की दिनचर्या और जीवनशैली भी प्रभावित हो गई थी। परिजनों ने उसका कई अस्पतालों में इलाज कराया, लेकिन आराम नहीं मिला। एक डॉक्टर ने तो बच्चेदानी निकालने तक की भी बात कह दी थी। ऐसे में महिला व परिजन काफी चिंतित रहने लगे थे। तभी परिजन आखिरी उम्मीद से उसे जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज से संबंद्ध हैलट अस्पताल के स्त्री एवं प्रसूति विभाग लेकर आए। यहां पर ओपीडी में देखने के साथ ही उसकी पूरी केस हिस्ट्री ली। सबसे पहले शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाने के लिए आयरन का इंजेक्शन लगाया। इसके बाद कुछ जांचे कराई। हीमोग्लोबिन की मात्रा शरीर में सही होने के बाद डॉ.रश्मि यादव, डॉ.दीप्ति, डॉ.अंजलि समेत टीम के साथ मिलकर महिला को फाइब्रॉइड के लिए मायोमेक्टमी किया गया। करीब डेढ़ घंटे चले ऑपरेशन के दौरान छोटे व बड़े 41 फाइब्रॉइड निकाले, जिसमे सबसे बड़ा 6 गुणा 5 सेंटीमीटर का था। साथ ही यह भी ख्याल रखा कि महिला दोबारा इससे पीड़ित न हो सके।

यह ऑपरेशन काफी उच्च जोखिम का था। ऑपरेशन के दौरान ज्यादा रक्तस्त्राव होने से हाइस्टेरेक्टमी का भी खतरा था। सुविधापूर्वक व कठिनाइयों को पार करते हुए महिला की जान बचाई गई है। साथ ही उसकी बच्चेदानी भी नहीं निकाली पड़ी। क्योंकि मायोमेक्टोमी गर्भाशय फाइब्रॉइड को हटाने के लिए की जाने वाली सर्जरी है। गर्भाशय फाइब्रॉइड ऊतक की गैर कैंसरयुक्त वृद्धि है, जो गर्भाशय में विकसित होती है। मायोमेक्टोमी गर्भाशय को बरकरार रखती है। इसलिए प्रक्रिया के बाद भी महिला गर्भवती हो सकती है। जब महिला की केस हिस्ट्री को जाना और जरूरी जांचें कराई तो सोच में पड़ गई थी। क्योंकि एक दो नहीं बल्कि 41 फाइब्रॉइड होना चिंता की बात थी। ऑपरेशन काफी जटिल था। इस केस ने काफी उलझन में डाल दिया था, क्योंकि मेरे लिए न सिर्फ मरीज की जान बचाना जरूरी था, बल्कि वह भविष्य में मातृत्व सुख की प्राप्ति कर सके यह भी आवश्यक था। इसलिए काफी चिंतन मनन और टीम में शामिल चिकित्सक डॉ.रश्मि यादव, डॉ.दीप्ति, डॉ.अंजलि के साथ सलाह मशविरा भी किया।

इसके बाद ऑपरेशन का निर्णय लिया। अंततः हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कामयाब हुए। मरीज का जीवन भी बच गया और उसके गर्भाशय को भी बचाने में हमें कामयाबी मिली। यह हमारी टीम की बहुत ही बड़ी उपलब्धि रही। ऑपरेशन सफल होने के बाद तो हर किसी के चेहरे पर विजयी मुस्कान थी, क्योंकि यह कोई छोटी- मोटी सफलता नहीं थी। ऐसे मामले बहुत ही कभी-कभी आते हैं जो हमें ऑपरेशन से पहले चिंता में डाल देते हैं।

मिसाल

धनीराम पैंथर मतलब लावारिस शवों के वारिस

मैकरावर्टगंज निवासी धनीराम पैंथर के जीवन का एकमात्र लक्ष्य है समाजसेवा। गरीब बेटियों के हाथ पीले कराना, लावारिस शवों का विधि-विधान से अंतिम संस्कार कराने को ही वे अपना धर्म मानते हैं। यही वजह है कि लोग उन्हें लावारिस शवों के वारिस के रूप में जानते हैं। उनके इस पुनीत कार्य में 10 से अधिक युवा भी पूरी शिद्दत से लगे हुए हैं। जैसे ही पोस्टमार्टम में कोई लावारिस शव आता है तो उनके फोन की घंटी बज उठती है। वे भी तुरंत सक्रिय हो जाते हैं, अंतिम संस्कार की तैयारियां पूरी करने में। - बृजेश श्रीवास्तव, वरिष्ठ पत्रकार

मृत व्यक्ति का धर्म पता चलने पर वे उसी की रीतियों के अनुसार अंतिम संस्कार भी कराते हैं ताकि किसी तरह का विवाद न हो। समाजसेवा के प्रति उनके समर्पण को ध्यान में रखते हुए जिलाधिकारी ने उनका नाम पद्मश्री अवार्ड 2026 के लिए केंद्र सरकार को भेजा है। उन्हें विभिन्न संस्थाओं से अब तक ढेरों पुरस्कार मिल चुके हैं।

बात 2009 की है। धनीराम पैंथर गंगा पुल पार कर अक्सर शुक्लागंज जाया करते थे। उन्होंने कई बार देखा कि पुलिसकर्मी लावारिस शवों को पुल से गंगा में फेंक रहे हैं।

कई बार शव पुल की रेलिंग में ही लटक गए। आने-जाने वाले भी बदबू से परेशान हुए। इससे धनीराम पैंथर का मन द्रवित हुआ और उन्होंने यह निर्णय लिया कि किसी भी शव को वे लावारिस नहीं रहने देंगे। इसके बाद उन्होंने सीएमओ, पुलिस अधिकारियों और जिलाधिकारी से मुलाकत की। शवों के अंतिम संस्कार का जिम्मा उठाने का निर्णय लिया। जब उन्होंने अभियान शुरू किया तो उन्हें लोगों के ताने भी सुनने पड़े, लेकिन पैंथर ने इसकी परवाह नहीं की। क्योंकि उन्होंने मन में इंसानियत और मानवता को बचाने का जिम्मा उठाने का संकल्प जो ले लिया था। अब तक वे तीन हजार से अधिक लावारिस शवों का अंतिम संस्कार कर चुके हैं। शवों के संस्कार के लिए उन्होंने 10 लोगों की टीम बनाई है।

सहयोगियों के साथ समाजसेवी धनीराम पैंथर।

शव को ले जाने के लिए संस्था के पास लोगों ने आर्थिक सहयोग दिया और इस पैसे से ही उन्होंने तीन शव वाहन खरीदे। वह शवों को जलाने के लिए लकड़ी, कफन आदि भी लोगों के सहयोग से ही लाते हैं। अब तो पैंथर ने मरणोपरांत देहदान का संकल्प भी ले लिया। उनका कहना है कि वे चाहते हैं कि उनकी मृत देह पर छात्र रिचर्स कर सकें और डॉक्टर बनकर लोगों का जीवन बचा सकें। उनकी प्रेरणा से सौ से अधिक लोगों ने देहदान का संकल्प लिया।

कोरोना काल में तो उन्होंने एक दिन 109 शवों का अंतिम संस्कार किया था। बेहद साधारण परिवार में जन्में धनीराम पैंथर 19 साल की उम्र में ही समाज सेवा में जुड़ गए थे। धनीराम पैंथर सर्वधर्म सभा के राष्ट्रीय सचिव भी हैं, जो समाज में हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए पैगाम देने का काम भी करते हैं। वह कहते हैं कि अंतिम श्वास तक लावारिस शवों के वारिस के रूप में काम करेंगे। वे गरीब बेटियों का विवाह भी कराते हैं। इसके लिए सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन भी करते हैं। इस कार्य में उन्होंने कई उद्यमी, कारोबारी भी मदद करते हैं।